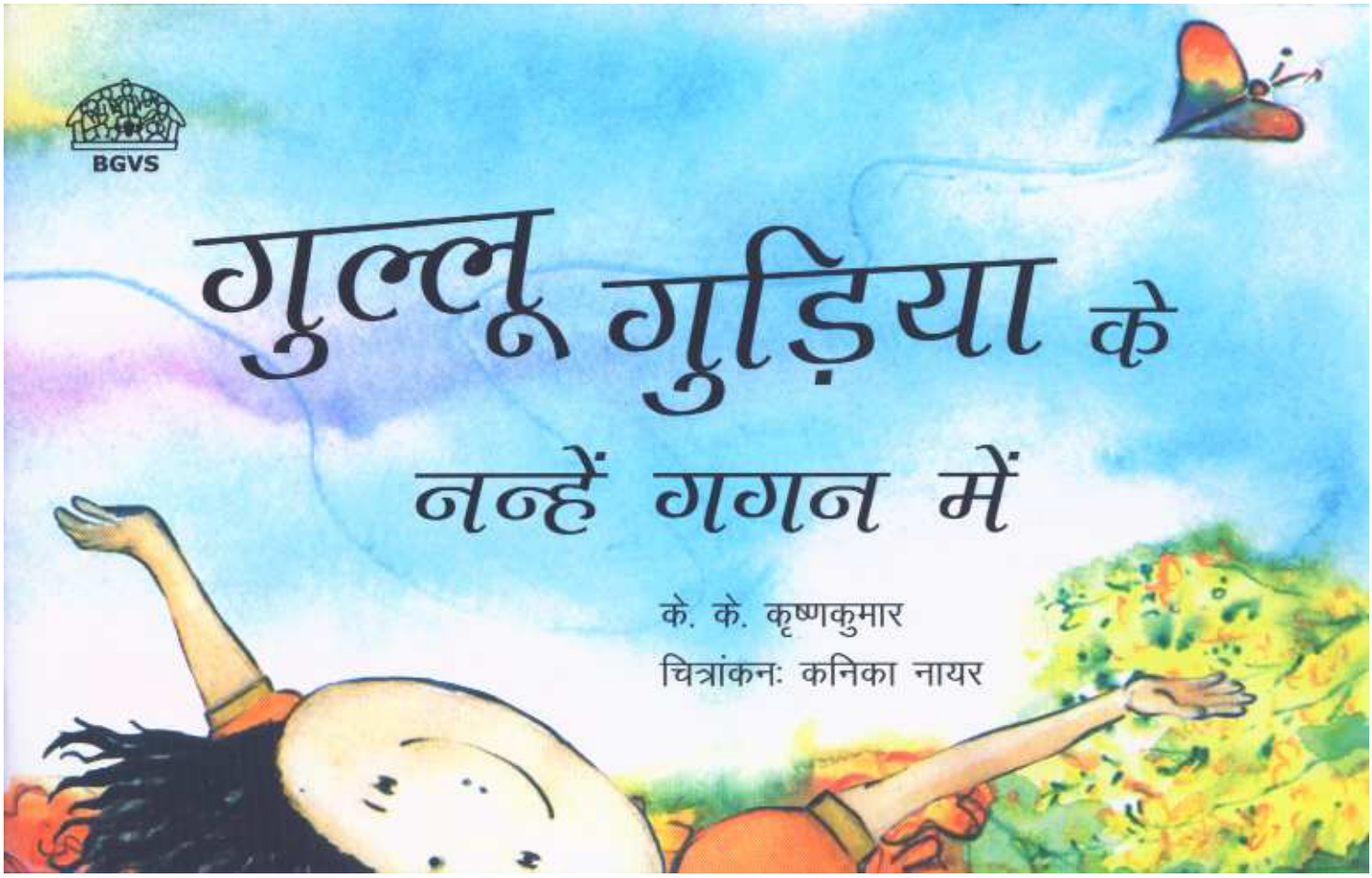
BGVS
गुल्लू गुड़िया के
नन्हें गगन में
के. के. कृष्णकुमार
चित्रांकनः कनिका नायर

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन-पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

गुल्लू गुड़िया के नन्हें गगन में **Gulloo Gudiya Ke Nanhe Gagan Mein**

कविता-कथा **Story-Poem**
के. के. कृष्णकुमार K.K.Krishnakumar

चित्रांकन **Illustration**
कनिका नायर Kanika Nair

पुस्तकमाला संपादक **Series Editor**
मनोज कुलकर्णी Manoj Kulkarni

प्रथम संस्करण **First Edition**
जनवरी, 2012 January, 2012

सहयोग राशि **Contributory Price**
40 रुपये Rs. 40

मुद्रण **Printing**
सन शाइन ऑफसेट Sun Shine Offset
नई दिल्ली - 110 018 New Delhi - 110 018

ISBN:- 978-93-81811-00-9
© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन
Publication and Distribution:
Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvsdelhi@gmail.com. Website : www.bgvs.org

गुल्लू गुड़िया के नन्हें गगन में

के. के. कृष्णकुमार
चित्रांकनः कनिका नायर

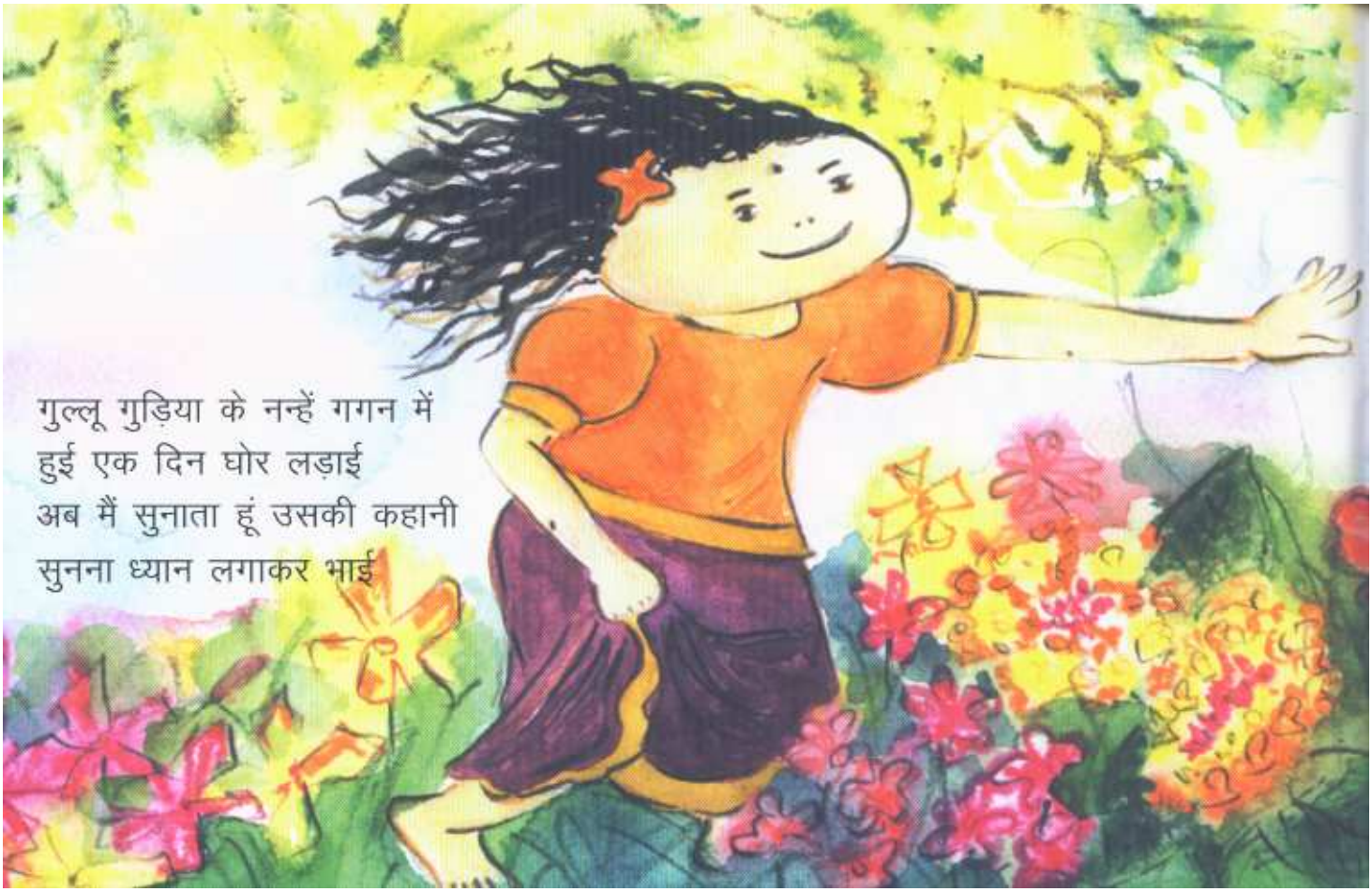
गुल्लू गुड़िया के नन्हें गगन में
हुई एक दिन घोर लड़ाई
अब मैं सुनाता हूं उसकी कहानी
सुनना ध्यान लगाकर भाई

उस दिन शाम को गुल्लू गुड़िया
एक तितली के पीछे पड़ी थी
सुन्दर तितली, प्यारी तितली
सात रंग के पंखों वाली
नानी–फूल की गोद में बैठी
थी मीठा संगीत सुनाती

तभी वहां गुल्लू गुड़िया
धीरे–धीरे, चुपके–छिपके
एक हाथ को मुंह पर रखके
दूसरे हाथ की दो प्यारी अंगुलियां उठाके
सुन्दर तितली के पंखों की ओर चली

धीरे...धीरे...धीरे...धीरे...

सोच रही थी मन ही मन
छुऊं न छुऊं, पकड़ूं न पकड़ूं
तभी बीच में नाना–हवा जी
अपनी मोटी लाठी उठाके
आए नानी–फूल के आगे
फहराया अपनी मूंछों को

और एक लम्बा, तगड़ा–सा बाल उड़ाके
छुला दिया गुल्लू गुड़िया की प्यारी नाक से...
फिर क्या हुआ?

एक नहीं, दो नहीं, छींक...छींक...छींक
गुल्लू की छींक की आवाज सुनके
बेचारी तितली एकदम घबराई
नाना–हवा जी जरा मुस्कराए
नानी–फूल की पंखुड़ी सिहराई

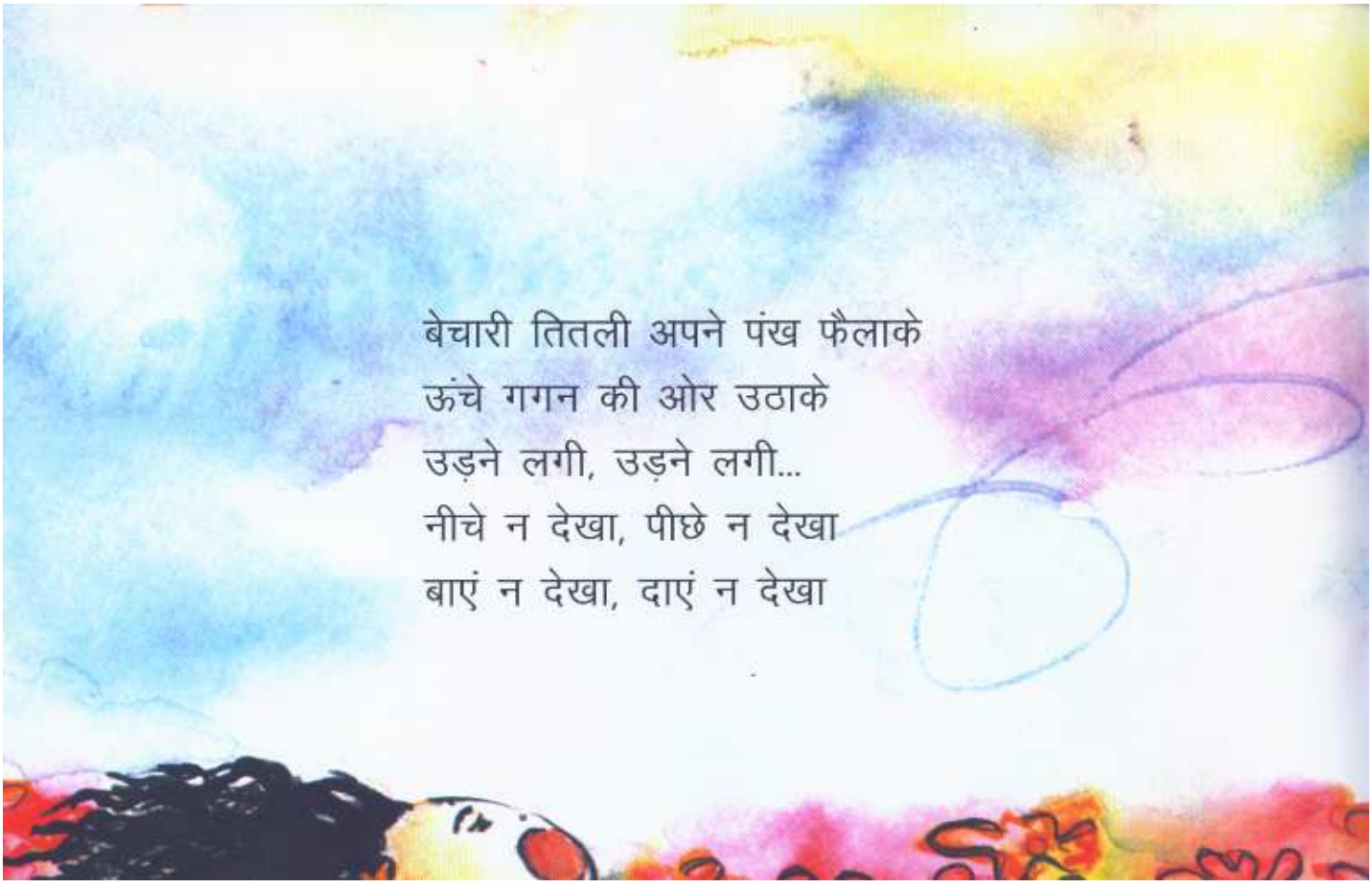
बेचारी तितली अपने पंख फैलाके
ऊंचे गगन की ओर उठाके
उड़ने लगी, उड़ने लगी...
नीचे न देखा, पीछे न देखा
बाएं न देखा, दाएं न देखा

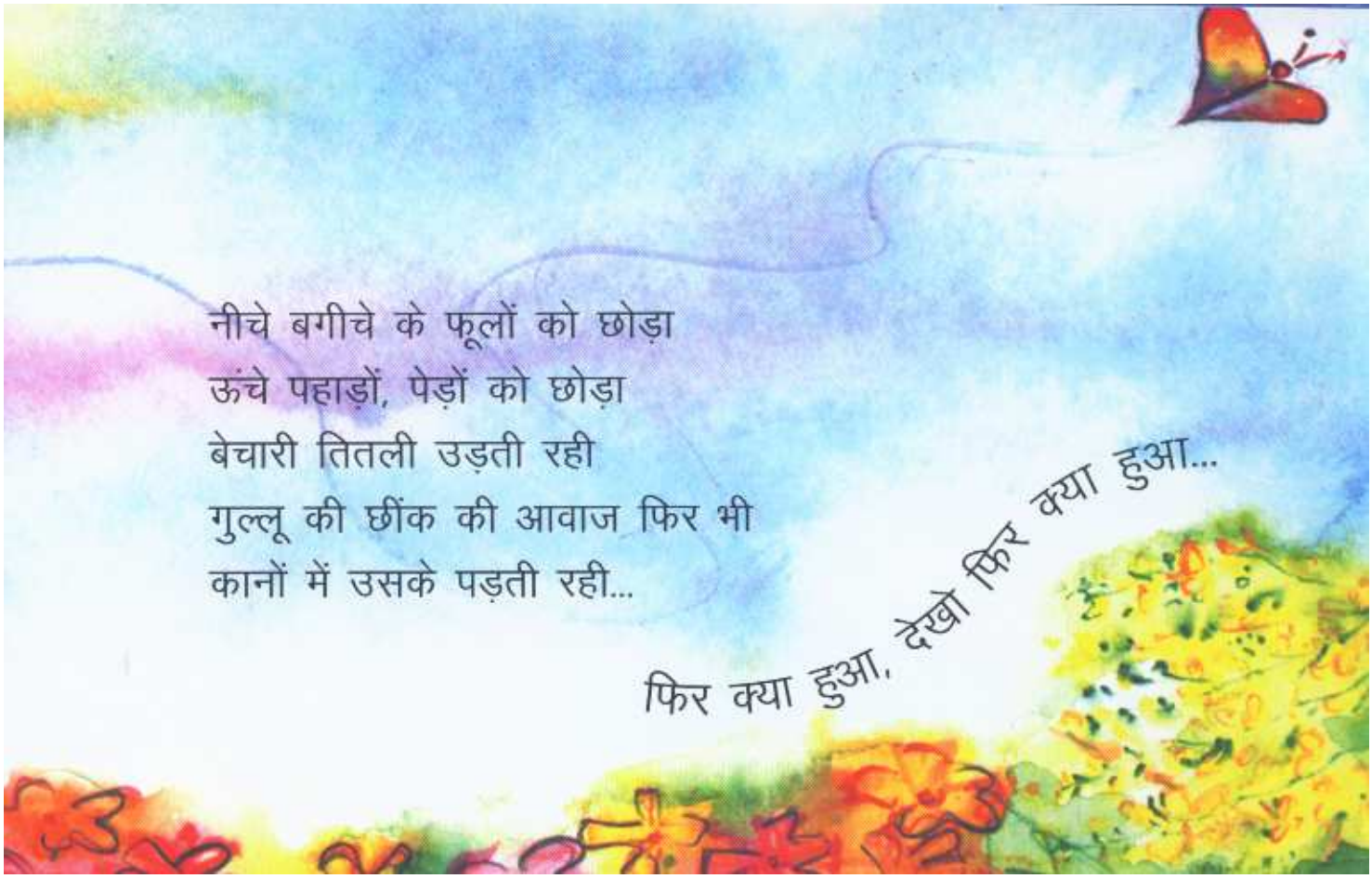
नीचे बगीचे के फूलों को छोड़ा
ऊंचे पहाड़ों, पेड़ों को छोड़ा
बेचारी तितली उड़ती रही
गुल्लू की छींक की आवाज फिर भी
कानों में उसके पड़ती रही...
फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ...

नन्हे गगन के बीच पहुंचकर
थमी जरा तितली, देखा चारों ओर...
बेचारी के पंखों में, पैरों में दर्द था
फिर भी, सब कुछ ठीक था, शान्त था
तो अब थोड़ा आराम करूं सोचा तितली ने

फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ...

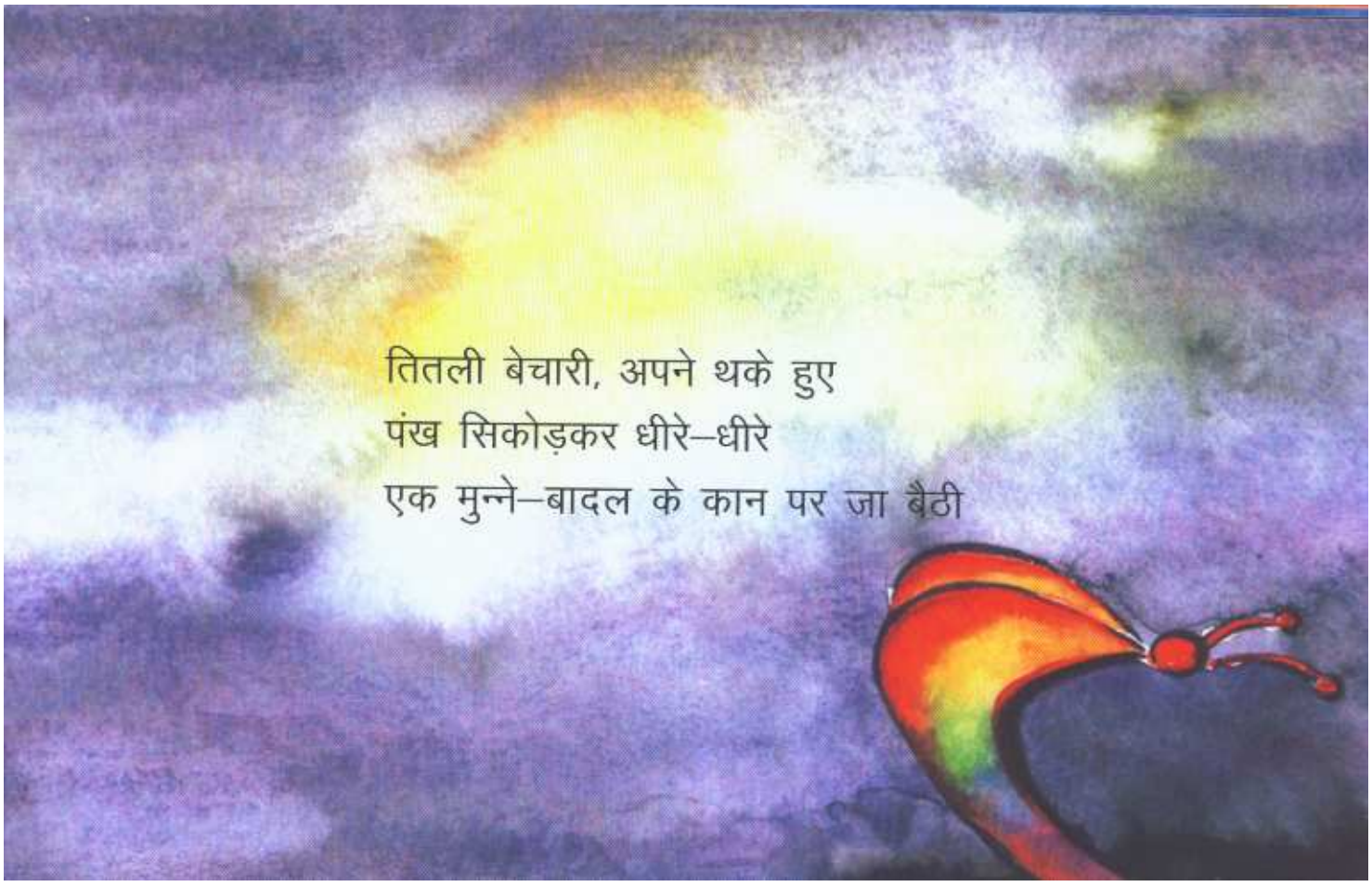

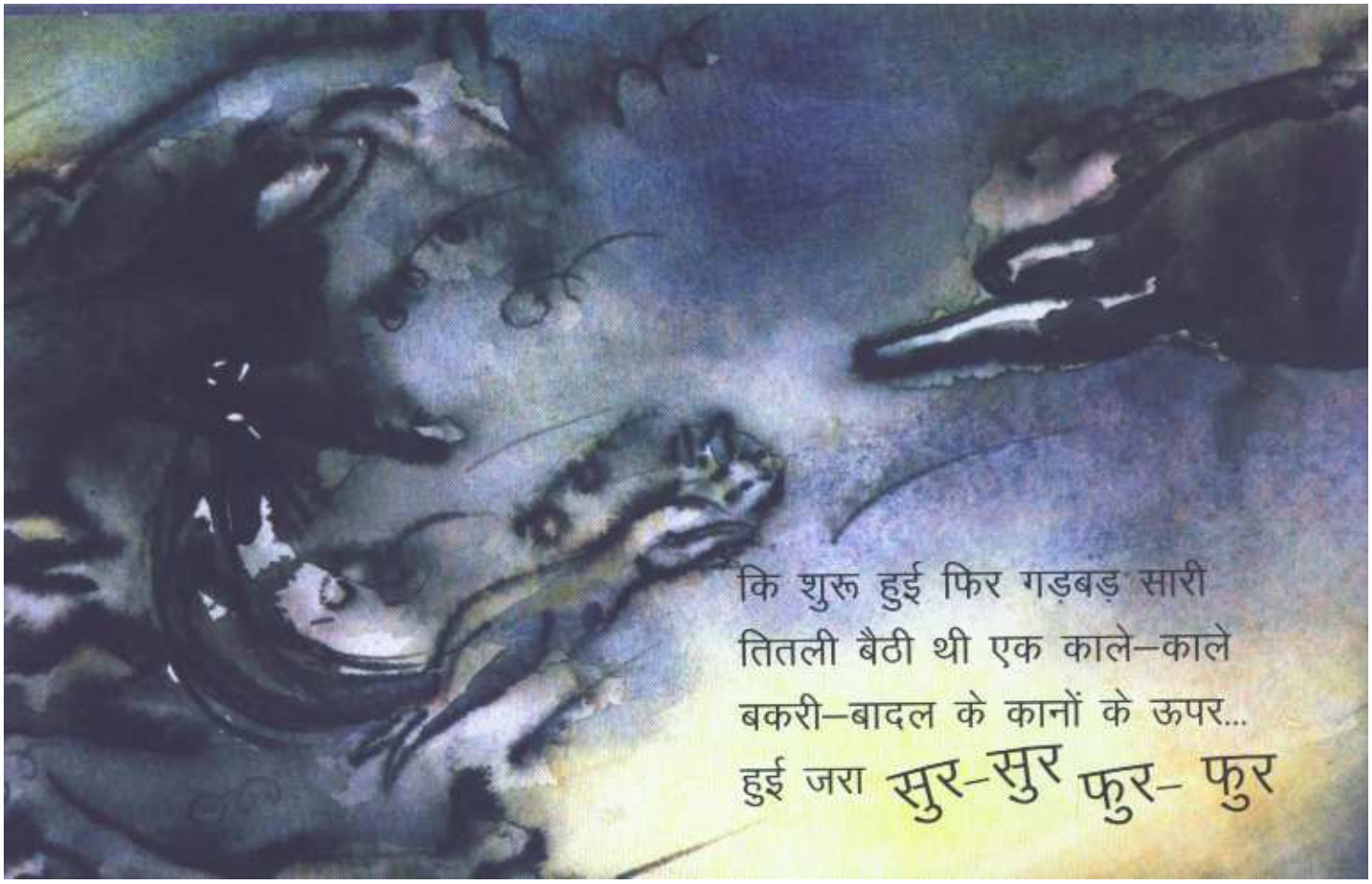
कि शुरू हुई फिर गड़बड़ सारी
तितली बैठी थी एक काले–काले
बकरी–बादल के कानों के ऊपर...
हुई जरा सुर–सुर फुर– फुर

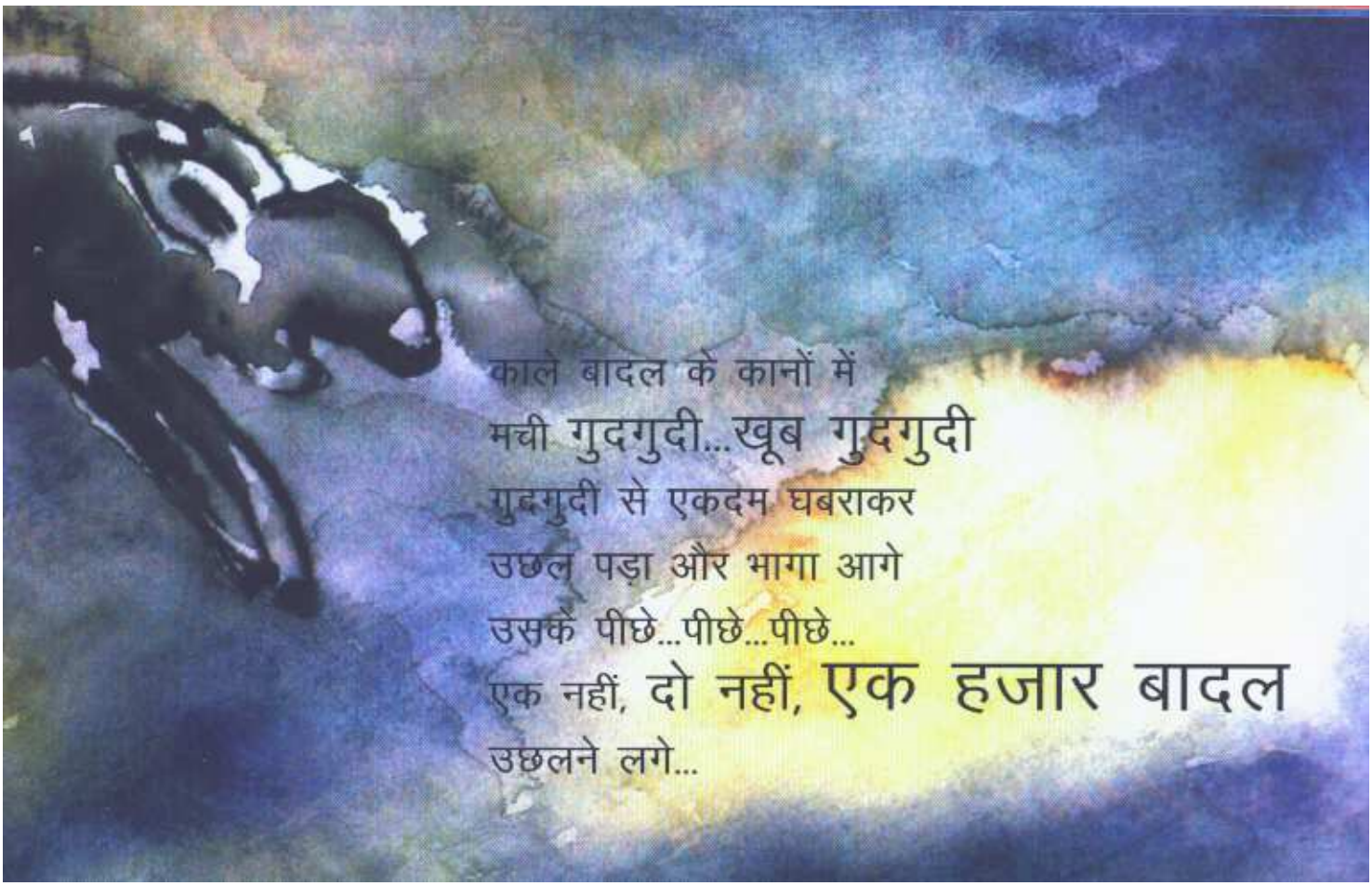
काले बादल के कानों में
मची गुदगुदी...खूब गुदगुदी
गुदगुदी से एकदम घबराकर
उछल पड़ा और भागा आगे
उसके पीछे...पीछे...पीछे...
एक नहीं, दो नहीं, एक हजार बादल
उछलने लगे...

काला बादल, बकरी–बादल
इधर–उधर कूदा चिल्लाकर
फिर तो भैया, सब कुछ गड़बड़
शुरू हो गई भारी भगदड़

एक डरा–सा मुर्गा–बादल
सोए हुए एक शेरनी–बादल के
सिर के ऊपर जा कूदा

शेरनी–बादल के सिर पर तो
हुआ सवार गजब–सा गुस्सा
गुस्सा, गुस्सा, गुस्सा ही गुस्सा
शेरनी–बादल गुस्से में गुर्रायी, गरजी
गरज–गरजकर आगे आयी

हाथी–बादल सोते–सोते नींद से जागा...
फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ...

शुरू हो गई घोर लड़ाई

शेरनी–बादल, हाथी–बादल,
काला बादल, पीला बादल, मोटा बादल,
छोटा बादल आपस में चिल्ला–चिल्लाकर,
शोर मचाकर उलझ पड़े एक–दूसरे से
घोर लड़ाई लड़ी गई रात–भर

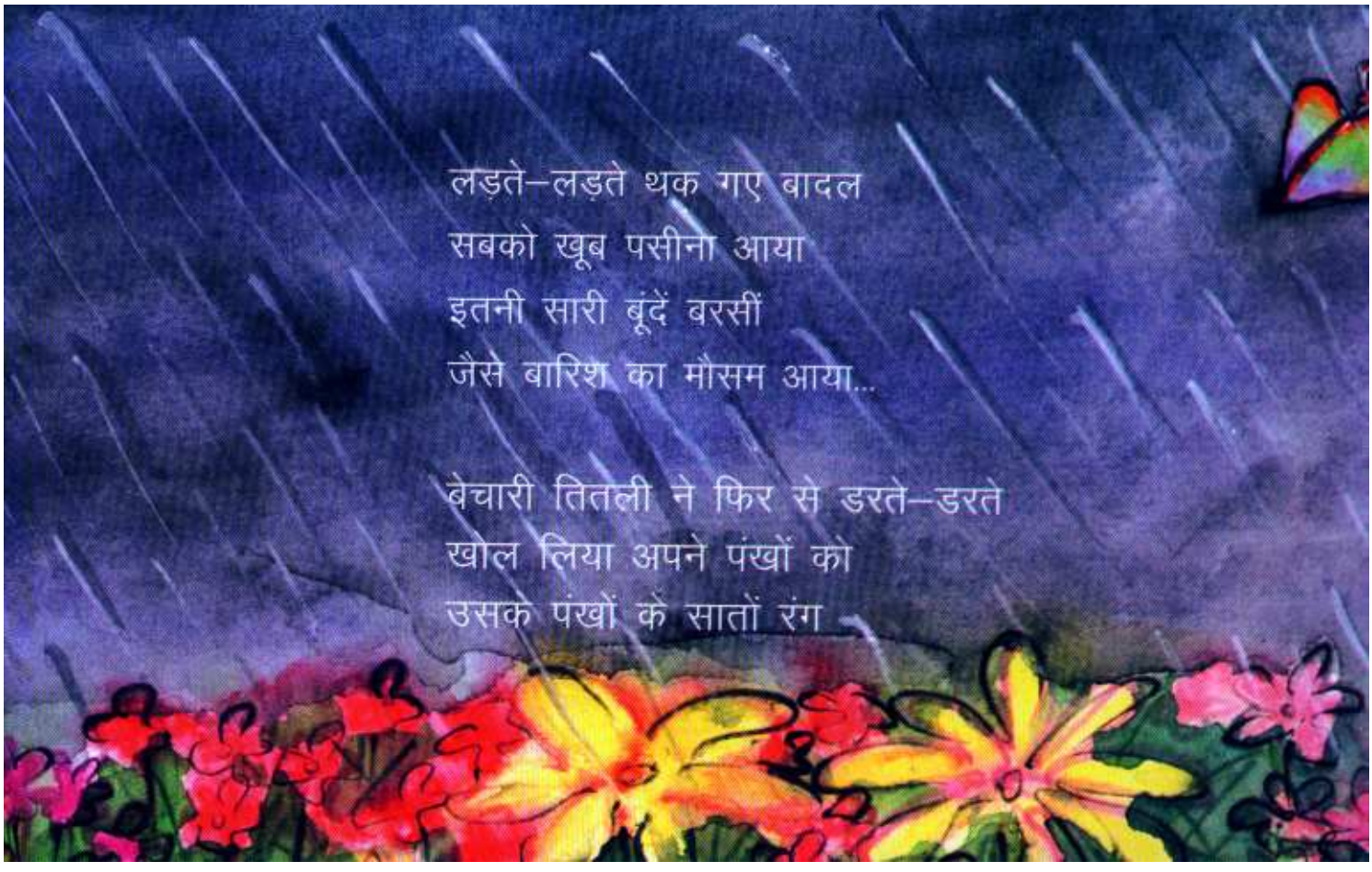
लड़ते–लड़ते थक गए बादल
सबको खूब पसीना आया
इतनी सारी बूंदें बरसीं
जैसे बारिश का मौसम आया...
बेचारी तितली ने फिर से डरते–डरते
खोल लिया अपने पंखों को
उसके पंखों के सातों रंग

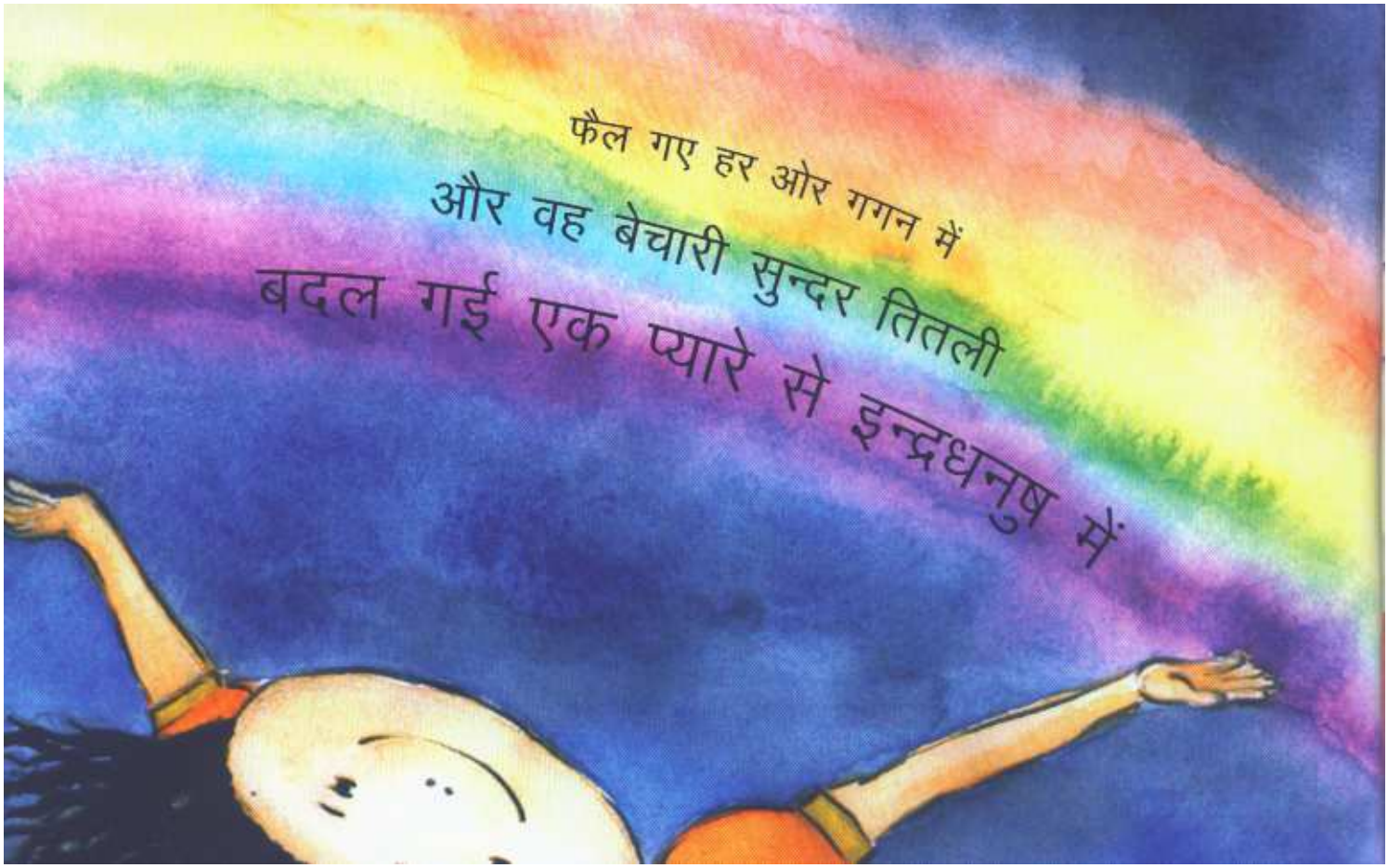

BGVS

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर–बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है।देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है।
आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए संगठन लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्पूर्ण योगदान है। जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी–विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई है। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन–जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।

के.के. कृष्णकुमार – जनविज्ञान, शिक्षा एवं साक्षरता के जनांदोलनों से लम्बा जुड़ाव। बच्चों की रचनात्मकता विकसित करने और शिक्षा को आनंददायक बनाने के प्रयोगों तहत अनेक पुस्तकें तैयार की। बीजीवीएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष। तिरुअंनतपुरम, केरल में रहते हैं।

कनिका नायर – पर्ल अकादमी ऑफ फैशन, नई दिल्ली से कम्युनिकेशन डिजाईन की स्नातक उपधि। बच्चों की पुस्तकों के लिए रचनात्मक चित्रांकन और लेखन में गहरी रुचि। जयपुर में रहती हैं।